भारत में जलवायु के बदलते प्रतिमान और मानव जीवन पर प्रभाव

Dr. Narendra singh

Assistant professor
M.S.J. Govt. P.G. Bharatpur (Raj.)

सार

संसार के बहुत से भागों में विशेषकर तापमान में हो रही निरंतर वृद्धि ने शारीरिक और जैविकीय व्यवस्थाओं के विभिन्न ढंगों को तरह.तरह से प्रभावित करना शुरू कर दिया है। मनुष्य के कार्यों का नकारात्मकप्रभाव आने वाली पीढ़ी पर निश्चित रूप से पड़ेगा।जलवायु की दशाओं में यह बदलाव प्राकृतिक भी हो सकता है और मानव के क्रियाकलापों का परिणाम भी। ग्रीनहाउस प्रभाव और वैश्विक तापन को मनुष्य की क्रियाओं का परिणाम माना जा रहा है जो औद्योगिक क्रांति के बाद मनुष्य द्वारा उद्योगों से निःसृत कार्बन डाईआक्साइड आदि गैसों के वायुमण्डल में अधिक मात्रा में बढ़ जाने का परिणाम है। जलवायु परिवर्तन के खतरों केबारे में वैज्ञानिक लगातार आगाह करते आ रहे हैं। ग्रीनहाउस प्रभाव या हरितगृह प्रभाव एक प्राकृतिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी ग्रह या उपग्रह के वातावरण में मौजूद कुछ गैसें वातावरण के तापमान को अपेक्षाकृत अधिक बनाने में मदद करतीं हैं। इन ग्रीनहाउस गैसों में कार्बन डाई आक्साइड, जल–वाष्प, मिथेन आदि शामिल हैं।

मुख्य शब्दः ग्रीनहाउस, औद्योगिक क्रांति जलवायु परिवर्तन, मानव जीवन,

प्रस्तावना

ऐसा अनुमान लगाया गया है कि वातावरण में यह कार्बन डाईआक्साइड पिछले सौ वर्ष से भी ज़्यादा समय से विद्यमान है और हमारे द्वारा जो कार्य आज किए जा रहे हैंए उनका नकारात्मक प्रभाव मानव स्वास्थ्यऔर भविष्य की पीढ़ियों की आशाओं पर निश्चित रूप से पड़ेगा। तापीय दबाव : जलवायु परिवर्तन के कारण गर्महवाओं के समय अंतराल में होती जा रही निरंतर बढ़ोतरी एक ख़तरनाक प्रवृत्ति की ओर संकेत है।

वायुमण्डल में ग्रीन हाउस गैसों, विशेषकर, कार्बनडाईआक्साइड और मीथेन के जमाव में बढ़ोतरी होती जा रही है। 1850 के दशक सेए जब से तापमान कारिकॉर्ड (दर्ज) करना प्रारंभ हुआए विश्व का तापमान 0.7 डिग्री सेल्सियस प्रतिवर्ष के लगभग बढ़ा है या गर्माया हैऔर अधिकांश गर्माहट तो पिछले तीन दशकों में ही नज़र आई है।

शहरी गर्म द्वीप प्रभाव का परिणाम यह होता है कि उपशहरी या ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में शहरों मेंतापमान अधिक बना रहता है। इसका मुख्य कारण गर्मी को काफी मात्रा में अपने में सोखने वाले धरातल–कुछकठोर और काले असफाल्ट हैं। प्रायः यह देखा गया है कि गर्म जलवायु वाले शहरों के मानव स्वास्थ्य की अपेक्षाजिन शहरों की जलवायु ठण्डी है वहां जलवायु परिवर्तन ताप के प्रभाव से होने वाली मृत्यु की दर अधिक होतीहै। इसका मुख्य कारण यह है कि गर्म जलवायु में रहने वाली जनसंख्याए काफी हद तक तापमान के उतारचढ़ाव को सहन कर लेती है। विश्व में जगह.जगह जिस दर से ठण्ड से मरने वालों की संख्या में कमी होगी,उसी दर से गर्मी से मरने वालों की संख्या में भी वृद्धि होती चली जाएगी।

बाढ़ और सूखाः

वायु प्रदूषण यद्यपि ग्रीष्म काल में या उच्च तापमान वाले दिनों में वायु प्रदूषण का प्रभाव अधिकहोता है, परन्तु यह कोई सर्वव्यापक अन्वेषण नहीं है। फिर भी ओजोन का स्तर उच्चतर तापमान पर अधिक होताहै और कुछ अध्ययनों में यह भी पाया गया है कि अत्यधिक मृत्यु दर के लिए यह ओजोन उत्तरदायी हो चलीहै। जलवायु परिवर्तन से वनों में आग लगने की संभावना बहुत अधिक बढ़ गई है।

विकासशील देशों में रहने वाली जनसंख्या के बाढ़ का शिकार होने की संभावना बहुत ही अधिक है। इसके कई कारण है, अधिक जोखिम वाले क्षेत्रों में उनका रहना जैसे बाढ़ के मैदान और तटीयक्षेत्रए कमजोर सार्वजनिक स्वास्थ्य आधारभूत ढांचा और जनसंख्या की आनुपातिक रूप से आर्थिक हानि।विशेषकर विकासशील देशों में स्वास्थ्य प्रभावों में शारीरिक चोट और अतिसार रोगों का बढ़ना भी शामिल है। इनदेशों में कुपोषण के बढ़ने की संभावना भी अधिक ही है। जनसंख्या के बोझ के कारण श्वास संबंधी रोगों केमामले बढ़ रहे हैं। मिट्टी के रेत के अधिक पैदा होने से (बनने से) श्वास संबंधी लक्षण उत्पन्न हो सकते हैं। इनदेशों में मनोवैज्ञानिक असंतुलन जैसे बेचौनी और अवसाद के मामले बढ़ रहे हैं। जिसके कारण घर का वातावरणनष्ट हो रहा है और आर्थिक रूप से जनता को हानि भी पहुंच रही है। आत्महत्या के मामलों में बढ़ोतरी हो रहीहै और बच्चों में व्यवहार असंतुलन के मामलों में भी वृद्धि हो सकती है। यह एक भयावह स्थिति है और जिसकासमय रहते निदान आवश्यक है। विकासशील देशों में सूखे का असर मानव स्वास्थ्य पर भी देखा जा सकता है।सूखे के कारण खाद्य उत्पादन, जीवन रक्षा पद्धति और मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है।

संक्रामक रोग तापमान, आर्द्रता, वर्षा और समुद्री जलस्तर में बढ़ोतरी के कारण संक्रामक रोगों केमामलों पर प्रभाव पड़ सकता है। मच्छर, जूं और मक्खियां सूक्ष्म तापमान और आर्द्रता में परिवर्तन के प्रति बहुतही संवेदनशील होते हैं। परन्तु रोग वाहक जनित रोग भी बहुत सारे अन्य परस्पर आधारित कारकों पर निर्भरकरते हैं। यद्यपि हाल के वर्षों में संक्रामक रोगों का प्रादुर्भाव हुआ हैए परन्तु अभी भी यह स्पष्ट नहीं है कि इनकेलिए जलवायु परिवर्तन ने कोई महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अन्य कारकों.मानव व पशु जनसंख्या कीगतिशीलता, सार्वजनिक स्वास्थ्य के आधारभूत ढांचे का चरमरानाए भूमि प्रयोग में बदलाव को सहायक कारकों मेंगिना जा सकता है।

जलवायु परिवर्तन के संभावित प्रभाव व परिवर्तन रोगवाहक और कृतंक पशुओं से पैदा होने वाले रोगोंसे स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे हैं। मलेरिया और डेंगू के मामलों में वृद्धि हो रही है। यहां इस बात का उल्लेखकरना अत्यन्त आवश्यक है कि विश्व के अधिकांश भागों में प्रभावकारी सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यवस्थाओं से मलेरियारोग फैल नहीं पाता है और यह रोग अपने वितरण की जलवायु सीमा में ही बना रहता है।नवीनतम जलवायु परिदृश्य का प्रयोग करते हुए संबंधी प्रयोग, यह सुझाव देते हैं कि सन् 2100 तकअफ्रीका में मलेरिया वितरण में 5 से 7 प्रतिशत की संभावित वृद्धि होगी। यह सुझाव भी दिया गया है कि मुख्यतौर पर मलेरिया रोग अक्षांशतर की अपेक्षा देशांतर क्षेत्र में अधिक फैलेगा।

जिन क्षेत्रों में सार्वजनिक स्वास्थ्य का आधारभूत ढांचा चरमरा गया है (जैसे मध्य एशिया और पूर्वसोवियत संघ के दक्षिण भाग) वहां जलवायु परिवर्तन के कारण मलेरिया रोग फिर से पैदा हो सकता है। जिनक्षेत्रों में स्थानीय स्तर पर मलेरिया का तो उन्मूलन कर दिया गया है परन्तु वहां इसके रोग वाहक मौजूद हैं,वहां पर इस बात की संभावना बनी रहती है कि स्थानीय स्तर पर ही जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से मलेरियाफैल जाए।

डेंगू कारक और अन्य अरबो वायरसः भारत में डेंगू महामारी व्यापक रूप से फैलती जा रही है। यह तोनहीं कहा जा सकता है कि यह घटना जलवायु परिवर्तन से या आधारभूत ढांचे की असफलता से जुड़ी है परन्तुभविष्य के बारे में अगर अनुमान लगाएं तो इस मुद्दे पर काफी प्रकाश पड़ता है। जलवायु कारकों से कुछ वायरस(मच्छर जनित) एनसिफीलिटिस जैसे सेंट लुईस ऐनसिफालिटस वाइरस और पश्चिमी नील वायरस काफीप्रभावित होते हैं। ये दोनों ही सूखे की स्थिति से जुड़े हैं और यह पाया गया है कि जब अमेरिका में 1999 कीगर्मियों में पश्चिमी नील वायरस दिखाई दिए तब न्यूयार्क में जुलाई में बहुत ज्यादा गर्मी रिकॉर्ड की गई थी।सूखे के बाद मध्यपूर्व और पूर्वी यूरोप में महामारी भी फैली थी।

जूं जनितरोगः जलवायु परिवर्तन का बहुत से जूं जनित रोगोंए विशेषकर लाईमी (स्लउम) रोग, रॉकीपर्वत धब्बा बुख़ार और जूं जनित एनसिफीलिटिस पर संभावित असर देखने के लिए लोगों में बहुत उत्सुकता हैं।जूं के वितरण के लिए तापमान और आर्द्रता मुख्य निर्धारक तत्व है। स्वीडन में स्थानीय जूं रोग वाहक केवितरण की उत्तरी सीमा के विस्तार और उसके बढ़ते मामलों का कारण हल्की सर्दियों को माना गया है। यूरोपमें जूं जनित एनसिफीलिटिस का सांख्यिकीय मॉडल यह दर्शाता है कि यद्यपि इस रोग के कारक उच्च अक्षांशोंऔर देशांतरों की ओर फैल सकते हैं, फिर भी जलवायु परिवर्तन जूं के जटिल जीवन चक्र को प्रभावित करसकता है और यह रोग अधिकांशतः मध्य यूरोप से गायब भी हो सकता है।

जल से जुड़े रोगः संसार भर में लगभग एक बिलियन लोगों के पास स्वच्छ पेयजल उपलब्ध होने कीकमी है। जल के दबाव पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों की मॉडलिंग यह दर्शाती है कि जलवायु परिदृश्य मेंकाफी विभिन्नताएं हैं। अध्ययन में पाया गया है कि दक्षिण और पश्चिम अफ्रीका और मध्यपूर्व के देशों में जल केदबाव के बढ़ने की संभावना उत्पन्न हो सकती है। यद्यपि यह मुश्किल है कि इस परिघटना को प्रत्यक्ष रूप सेजल जनित रोगों के जोखिम से जोड़ दिया जाए। संसार के विभिन्न भागों में, यदि सर्दी के महीनों में बाढ़ कीघटना में वृद्धि हो जाती है और गर्मियों में सूखे के महीने बढ़ जाते हैंए तब कुछ देशों में तो पानी से होने वालेरोग भी उत्पन्न हो सकते हैं और जनता को दोहरी मार झेलनी पड़ सकती है। संयुक्त राज्य अमेरिका और विश्वके अन्य भागों में भारी वर्षा के कारण क्राइप्टोपोराइडोसिस के मामले सामने आए हैं।

कुपोषणः संयुक्त राष्ट्र खाद्य व कृषि संगठन के अनुसार विकासशील देशों की 790 मिलियन जनताकुपोषण की शिकार है। खाद्य उत्पादन पर पड़ने वाले जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के अध्ययन यह बताते हैं किउच्च व मध्य अक्षांशों पर तो खाद्य अनाज की उपज बढ़ने की संभावना है पर इसके निम्न अक्षांशों पर कम होनेकी संभावना है। एक विशेष चिंता की बात यह है कि अफ्रीकाए एशिया और दण् एशिया में जलवायु परिवर्तनपोषण स्तर को बुरी तरह प्रभावित कर सकता है। इसका मुख्य कारण है सूखे का प्रकोप लगातार तेजी से बढ़तेजाना।

जलवायु परिवर्तन को कम करनाः कम करने का अर्थ है वे नीतियां जिनके कारण ग्रीन हाउस गैस केउत्सर्जन को कम किया जा सके (ऊर्जा संरक्षण को बढ़ावा देना और नवीनीकरण ऊर्जा स्रोतों का प्रयोग)।अमेरिका के संदर्भ में यह बात विशेष तौर पर लागू होती है क्योंकि वह विश्व की लगभग 25 प्रतिशत ग्रीनहाउस गैस का उत्सर्जन करता है। यद्यपि ग्रीन हाउस गैस के उत्सर्जन को कम करने के लिए नीति बनाने केबारे में चर्चा करना एक बिल्कुल ही अलग मुद्दा है, इस बात को रेखांकित करना चाहिए कि ग्रीन हाउस गैस केउत्सर्जन में कमी आने से वायु प्रदूषण कम होगा जिससे कि मानवता को तत्काल लाभ मिलेगा। इन लाभों का अनुपात इस बात पर निर्भर है कि हम किन.किन ऊर्जा स्रोतों का प्रयोग कर पाते हैं।

उद्देश्य

जलवायु परिवर्तन की व्याख्या; और जलवायु अनुकूलन का वर्णन ।

जलवायु परिवर्तन?

जलवायु परिवर्तन के कुछ प्रभावों को वर्तमान में भी महसूस किया जा सकता है। पृथ्वी के तापमान मेंवृद्धि होने से हिमनद पिघल रहे हैं और महासागरों का जल स्तर बढ़ता जा रहा, परिणामस्वरूप प्राकृतिकआपदाओं और कुछ द्वीपों के डूबने का खतरा भी बढ़ गया है।

जलवायु परिवर्तन को समझने से पूर्व यह समझ लेना आवश्यक है कि जलवायु क्या होता है?सामान्यतः जलवायु का आशय किसी दिये गए क्षेत्र में लंबे समय तक औसत मौसम से होता है।

अतः जब किसी क्षेत्र विशेष के औसत मौसम में परिवर्तन आता है तो उसे जलवायु परिवर्तन (ब्सपउंजमबिंदहम) कहते हैं।जलवायु परिवर्तन को किसी एक स्थान विशेष में भी महसूस किया जा सकता है एवं संपूर्ण विश्व मेंभी। यदि वर्तमान संदर्भ में बात करें तो यह इसका प्रभाव लगभग संपूर्ण विश्व में देखने को मिल रहा है। पृथ्वीके समग्र इतिहास में यहाँ की जलवायु कई बार परिवर्तित हुई है एवं जलवायु परिवर्तन की अनेक घटनाएँ सामनेआई हैं। पृथ्वी का अध्ययन करने वाले वैज्ञानिक बताते हैं कि पृथ्वी का तापमान लगातार बढ़ता जा रहा है।पृथ्वी का तापमान बीते 100 वर्षों में 1 डिग्री फारेनहाइट तक बढ़ गया है। पृथ्वी के तापमान में यह परिवर्तनसंख्या की दृष्टि से काफी कम हो सकता है, परंतु इस प्रकार के किसी भी परिवर्तन का मानव जाति पर बड़ाअसर हो सकता है।

जलवायु परिवर्तन के कारण

ग्रीनहाउस गैसें

पृथ्वी के चारों ओर ग्रीनहाउस गैस की एक परत बनी हुई है, इस परत में मीथेन, नाइट्रस ऑक्साइडऔर कार्बन डाइऑक्साइड जैसी गैसें शामिल हैं।ग्रीनहाउस गैसों की यह परत पृथ्वी की सतह पर तापमान संतुलन को बनाए रखने में आवश्यक है औरविश्लेषकों के अनुसार, यदि यह परत नहीं होगी तो पृथ्वी का तापमान काफी कम हो जाएगा।आधुनिक युग में जैसे–जैसे मानवीय गतिविधियाँ बढ़ रही हैं, वैसे–वैसे ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन मेंभी वृद्धि हो रही है और जिसके कारण वैश्विक तापमान में वृद्धि हो रही है।

मुख्य ग्रीनहाउस गैसें

- **मीथेनः** जैव पदार्थों का अपघटन मीथेन का एक बड़ा स्रोत है। उल्लेखनीय है कि मीथेन, कार्बनडाइऑक्साइड से अधिक प्रभावी ग्रीनहाउस गैस है, परंतु वातावरण में इसकी मात्रा कार्बनडाइऑक्साइड की अपेक्षा कम है।
- **लोरोफ्लोरोकार्बनः** इसका प्रयोग मुख्यतः रेफ्रिजरेंट और एयर कंडीशनर आदि में किया जाता है एवंओज़ोन परत पर इसका काफी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।
- **कार्बन डाइऑक्साइडः** इसे सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रीनहाउस गैस माना जाता है और यह प्राकृतिक व मानवीयदोनों ही कारणों से उत्सर्जित होती है। वैज्ञानिकों के अनुसार, कार्बन डाइऑक्साइड का सबसे अधिकउत्सर्जन ऊर्जा हेतु जीवाश्म ईंधन को जलाने से होता है। आँकड़े बताते हैं कि औद्योगिक क्रांति केपश्चात् वैश्विक स्तर पर कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा में 30 प्रतिशत की बढ़ोतरी देखने को मिली है।

जलवायु परिवर्तन के प्रभाव

- **वर्षा के पैटर्न में बदलाव**

पिछले कुछ दशकों में बाढ़, सूखा और बारिश आदि की अनियमितता काफी बढ़ गई है। यह सभीजलवायु परिवर्तन के परिणामस्वरूप ही हो रहा है। कुछ स्थानों पर बहुत अधिक वर्षा हो रही है, जबकि कुछस्थानों पर पानी की कमी से सूखे की संभावना बन गई है।

- **समुद्र जल के स्तर में वृद्धि**

वैश्विक स्तर पर ग्लोबल वार्मिंग के दौरान ग्लेशियर पिघल जाते हैं और समुद्र का जल स्तर ऊपरउठता है जिसके प्रभाव से समुद्र के आस–पास के द्वीपों के डूबने का खतरा भी बढ़ जाता है। मालदीव जैसेछोटे द्वीपीय देशों में रहने वाले लोग पहले से ही वैकल्पिक स्थलों की तलाश में हैं।

- **वन्यजीव प्रजाति का नुकसान**

तापमान में वृद्धि और वनस्पति पैटर्न में बदलाव ने कुछ पक्षी प्रजातियों को विलुप्त होने के लिये मजबूरकर दिया है। विशेषज्ञों के अनुसार, पृथ्वी की एक–चौथाई प्रजातियाँ वर्ष 2050 तक विलुप्त हो सकती हैं। वर्ष2008 में ध्रुवीय भालू को उन जानवरों की सूची में जोड़ा गया था जो समुद्र के स्तर में वृद्धि के कारण विलुप्तहो सकते थे।

- **उच्च तापमान**

पावर प्लांट, ऑटोमोबाइल, वनों की कटाई और अन्य स्रोतों से होने वाला ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जनपृथ्वी को अपेक्षाकृत काफी तेज़ी से गर्म कर रहा है। पिछले 150 वर्षों में वैश्विक औसत तापमान लगातार बढ़रहा है और वर्ष 2016 को सबसे गर्म वर्ष के रूप में रिकॉर्ड किया गया है। गर्मी से संबंधित मौतों और बीमारियों,बढ़ते समुद्र स्तर, तूफान की तीव्रता में वृद्धि और जलवायु परिवर्तन के कई अन्य खतरनाक परिणामों में वृद्धि केलिये बढ़े हुए तापमान को भी एक कारण माना जा सकता है। एक शोध में पाया गया है कि यदि ग्रीनहाउसगैसों के उत्सर्जन के विषय को गंभीरता से नहीं लिया गया और इसे कम करने के प्रयास नहीं किये गए तोसदी के अंत तक पृथ्वी की सतह का औसत तापमान 3 से 10 डिग्री फारेनहाइट तक बढ़ सकता है।

- **रोगों का प्रसार और आर्थिक नुकसान**

जानकारों ने अनुमान लगाया है कि भविष्य में जलवायु परिवर्तन के परिणामस्वरूप मलेरिया और डेंगूजैसी बीमारियाँ और अधिक बढ़ेंगी तथा इन्हें नियंत्रित करना मुश्किल होगा। विश्व स्वास्थ्य संगठन ;भ्द्ध केआँकड़ों के अनुसार, पिछले दशक से अब तक हीट वेव्स (भ्मंज ूअमे) के कारण लगभग 150,000 से अधिकलोगों की मृत्यु हो चुकी है।

- **जंगलों में आग**

जलवायु परिवर्तन के कारण लंबे समय तक चलने वाली हीट वेव्स ने जंगलों में लगने वाली आग केलिये पयुक्त गर्म और शुष्क परिस्थितियाँ पैदा की हैं। ब्राज़ील स्थित नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर स्पेस रिसर्च(छंजपवदंस प्देजपजनजम वित चंबम त्मेमंतबी – प्छच्) के आँकड़ों के मुताबिक, जनवरी 2019 से अब तकब्राज़ील के अमेज़न वन (।ज़ंवद थ्वतमेजे) कुल 74,155 बार वनाग्नि का सामना कर चुके हैं। साथ ही यहभी सामने आया है कि अमेज़न वन में आग लगने की घटना बीते वर्ष (2018) से 85 प्रतिशत तक बढ़ गई हैं।

- **स्वास्थ्य**

जलवायु परिवर्तन से जनसंख्या के स्वास्थ्य के लिए कई तरह के जोखिम हैं। यदि वैश्विक जलवायुपरिवर्तन अपने वर्तमान प्रक्षेपवक्र पर जारी रहता है, तो ये जोखिम भविष्य के दशकों में संभावित रूप सेमहत्वपूर्ण स्तरों तक बढ़ जाएंगे। स्वास्थ्य जोखिमों की तीन मुख्य श्रेणियों में शामिल हैंः (प) प्रत्यक्ष–अभिनय प्रभाव(जैसे गर्मी की लहरों, प्रवर्धित वायु प्रदूषण और भौतिक मौसम आपदाओं के कारण), (पप) पारिस्थितिक तंत्र औरसंबंधों में जलवायु संबंधी परिवर्तनों के माध्यम से मध्यस्थता वाले प्रभाव (जैसे फसल की पैदावार, मच्छरपारिस्थितिकी, समुद्री उत्पादकता), और (पपप) दरिद्रता, विस्थापन, संसाधन संघर्ष (जैसे पानी), और आपदा के बादमानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से संबंधित अधिक विसरित (अप्रत्यक्ष) परिणाम।

जलवायु परिवर्तन से बच्चों के कुपोषण, डायरिया से होने वाली बीमारियों से होने वाली मौतों और अन्यसंक्रामक रोगों के प्रसार को कम करने की दिशा में अंतर्राष्ट्रीय प्रगति को धीमा करने, रोकने या उलटने काखतरा है। जलवायु परिवर्तन मुख्य रूप से मौजूदा, अक्सर भारी, स्वास्थ्य समस्याओं को बढ़ा देता है, खासकरदुनिया के गरीब हिस्सों में। मौसम की स्थिति में मौजूदा बदलाव पहले से ही विकासशील देशों में गरीब लोगोंके स्वास्थ्य पर कई प्रतिकूल प्रभाव डाल रहे हैं, ख७८, और ये भी जलवायु परिवर्तन के अतिरिक्त दबावों से 'गुणा'होने की संभावना है।

एक बदलती जलवायु इस प्रकार जनसंख्या स्वास्थ्य की पूर्वापेक्षाओं को प्रभावित करती हैः स्वच्छ हवाऔर पानी, पर्याप्त भोजन, संक्रामक रोग एजेंटों पर प्राकृतिक बाधाएं, और आश्रय की पर्याप्तता और सुरक्षा। एकगर्म और अधिक परिवर्तनशील जलवायु कुछ वायु प्रदूषकों के उच्च स्तर की ओर ले जाती है। यह अशुद्ध पानीऔर दूषित भोजन के माध्यम से संक्रामक रोगों के संचरण की दर और सीमाओं को बढ़ाता है, और वेक्टर जीवों(जैसे मच्छरों) और मध्यवर्ती या जलाशय मेजबान प्रजातियों को प्रभावित करता है जो संक्रामक एजेंट (जैसेमवेशी,, चमगादड़ और कृन्तकों को आश्रय देते हैं। तापमान, वर्षा और मौसम में परिवर्तन कई क्षेत्रों में कृषिउत्पादन से समझौता करते हैं, जिनमें कुछ कम विकसित देश भी शामिल हैं, इस प्रकार बाल स्वास्थ्य औरविकास और वयस्कों के समग्र स्वास्थ्य और कार्यात्मक क्षमता को खतरे में डालते हैं। जैसे–जैसे गर्मी बढ़ेगी,मौसम संबंधी आपदाओं की गंभीरता (और शायद आवृत्ति) बढ़ेगी – और ऐसा प्रतीत होता है कि पिछले कईदशकों में दुनिया के कई क्षेत्रों में ऐसा हुआ है।

स्वास्थ्य समानता और जलवायु परिवर्तन का मानव स्वास्थ्य और जीवन की गुणवत्ता पर बड़ा प्रभावपड़ता है, और ये कई तरह से परस्पर जुड़े हुए हैं। स्वास्थ्य के सामाजिक निर्धारकों पर डब्ल्यूएचओ आयोग कीरिपोर्ट बताती है कि वंचित समुदायों को उनके बढ़ते जोखिम और स्वास्थ्य खतरों के प्रति संवेदनशीलता केकारण जलवायु परिवर्तन के बोझ का एक अनुपातहीन हिस्सा लेने की संभावना है। मलेरिया और डायरिया सेहोने वाली 90 प्रतिशत से अधिक मौतें 5 साल या उससे कम उम्र के बच्चों को होती हैं, ज्यादातर विकासशीलदेशों में। ख21, अन्य गंभीर रूप से प्रभावित जनसंख्या समूहों में महिलाएं, बुजुर्ग और छोटे द्वीप विकासशील राज्योंऔर अन्य तटीय क्षेत्रों, बड़े शहरों या पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले लोग शामिल हैं।

निष्कर्ष

आने वाले दशकों में, अपने रोगियों और समुदायों के दीर्घकालिक स्वास्थ्य में रुचि रखने वाले डॉक्टरों की जलवाय ुपरिवर्तन को कम करने और इसके प्रतिकूल स्वास्थ्य प्रभावों की तैयारी और प्रबंधन में केंद्रीय भूमिका होगी।स्थानीय से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अंतःविषय और अंतरक्षेत्रीय भागीदारी जो जलवायु परिवर्तन को स्थिर करने केलिए शमन रणनीतियों की तेजी से तैनाती के माध्यम से स्वास्थ्य में सुधार की तलाश करती है और जलवायुपरिवर्तन के स्वास्थ्य प्रभाव को कम करने के लिए सक्रिय अनुकूलन कार्यक्रमों के विकास मौलिक हैं। हमें अभीकार्रवाई करनी चाहिए क्योंकि जिस दर से मानव पर्यावरण बदल रहा है वह चिंताजनक है और मानव स्वास्थ्यपर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव चिंताजनक होता जा रहा है। सरकार के सभी स्तरों, स्वास्थ्य पेशेवरों और अन्यहितधारकों को हमारी पीढ़ी के सामाजिक आर्थिक विकास और वैश्विक पारिस्थितिकी तंत्र से शादी करने में सक्षमहोना चाहिए। जलवायु परिवर्तन से स्वास्थ्य की रक्षा करना इस बात पर निर्भर करता है कि हम जलवायुपरिवर्तन और ओजोन परत के क्षरण से उत्पन्न चुनौतियों का कैसे समाधान करते हैं।इस कार्य से यह स्पष्ट है कि यदि हमारी पीढ़ी को जलवायु परिवर्तन से स्वास्थ्य की रक्षा करनी है, तोहमें अपनी सभी गतिविधियों में पारिस्थितिक रूप से स्वीकार्य रणनीतियों को डिजाइन करना और अपनाना शुरूकरना चाहिए, जो स्थिरता सुनिश्चित करता है। दूसरे शब्दों में, हमारे सामाजिक–आर्थिक प्रयासों की स्थिरता कोयह सुनिश्चित करना चाहिए कि जीवमंडल और उसके घटक पारिस्थितिकी तंत्र बरकरार और उत्पादक बने रहें,ताकि पृथ्वी पर जीवन उनसे जीविका प्राप्त करना जारी रख सके। जलवायु परिवर्तन पहले से ही सामुदायिकभलाई के लिए खतरा है। यह केवल एक आर्थिक मुद्दा नहीं है; यह हमारे सपोर्ट सिस्टम के लिए खतरा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. दूरदर्शिता। (2011)। प्रवासन और वैश्विक पर्यावरण परिवर्तन। लंदनरू विज्ञान के लिए सरकारी
2. कार्यालय।
3. पर्यावरण कानून संस्थान (ईएलआई) (2003) के रूप में उद्धृत, तेल, के पी; गुप्ता, जेडी (2008)हिमालयी
4. क्षेत्र में पहुंच और लाभ साझाकरण (एबीएस) पर क्षेत्रीय ढांचा। काठमांडू, नेपालरू प्ब्डव्क
5. मैकमाइकल, ए जे (1993)। ग्रह अधिभाररू वैश्विक पर्यावरण परिवर्तन और का स्वास्थ्य मानव प्रजाति।
6. कैम्ब्रिजरू कैम्ब्रिज विश्व – विद्यालय का मुद्रणालय।
7. मैकमाइकल, ए जे (1996)। मानव जनसंख्या स्वास्थ्य। मेंरू जलवायु परिवर्तन 1995रू प्रभाव, अनुकूलन
8. एंथोनी– स्मिथ। (2009)। तटीय लोगों की समुद्र स्तर की भेद्यता, संख्या 7ध्2009। बॉनरू पर्यावरण
9. और मानव सुरक्षा के लिए यूएनयू संस्थान (यूएनयू–ईएचएस)।
10. ब्रेनकर्ट, ए.एल. और मेलोन, ई.एल. (२००५)। मॉडलिंग भेद्यता और जलवायु परिवर्तन के प्रतिलचीलापनरू
11. भारत और भारतीय राज्यों का एक केस स्टडी। जलवायु परिवर्तन। 72 (1–2)रू57–102।